महंत घासीदास स्मारक

संग्रहालय रायपुर

महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय

(उद्भव, संगठन और कार्यकलाप)
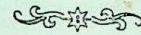
सहायक संग्रहाध्यक्ष

बालचन्द्र जैन, एम०ए०

साहित्य शास्त्री
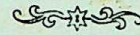
रायपुर

१९६० ईस्वी : १८८१ शक

भारत शासन की वित्तीय सहायता से
सहायक संग्रहाध्यक्ष द्वारा संग्रहीत और प्रकाशित।

★

मुख्य छायाचित्रकार : विरदी स्टूडियो रायपुर।
ब्लाक निर्माता श्रौर मुद्रक : सिंघई मौजीलाल एण्ड सन्स जबलपुर।

इस महान शैक्षणिक संस्था का उद्घाटन-समारंभ
भारतीय संघ के राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद जी
द्वारा
शनिवार, दिनांक २१ मार्च १९५३ को संपन्न हुआ।

जनता की सेवा हेतु यह फूले फले

रायपुर
२१-३-१९५३

—राजेन्द्रप्रसाद
राष्ट्रपति, भारत गणराज्य

महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय

खुलने का समय :

अप्रैल से अक्टूबर	७ वजे से १० वजे प्रातः ३ वजे से ६ वजे सायं
नवम्बर से मार्च	८ वजे से ११ वजे प्रातः २ वजे से ५ वजे सायं

बंद रहने के दिन :

सब सोमवार, दीपावली, गणतंत्र दिवस, होली और दशहरा (आधे दिन)

——:o:——

प्रवेश : निःशुल्क

महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय, रायपुर

महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय, रायपुर

इतिहास

मध्यप्रदेश के छत्तीसगढ़ क्षेत्र में पुरातत्त्व सामग्री की बहुलता है; अनेक जनजातियां निवास करती हैं जिनके रीति-रिवाज और रहन-सहन भिन्न-भिन्न ढंग के हैं; प्राणी और पादप भी यहां बहुत प्रकार के पाये जाते हैं; इन के संग्रह और अध्ययन से ज्ञानवर्धन होता है।

आज से लगभग ८५ वर्ष पूर्व रायपुर में इसी उद्देश्य से एक विभागीय संग्रहालय की स्थापना का विचार हुआ था जिसमें छत्तीसगढ़ के जनजीवन, जनरुचि, कलाशैली, स्थानीय हस्तकौशल और उद्योग आदि का सम्पूर्ण चित्र प्राप्त हो सके। राजनांदगांव के तत्कालीन शासक, दिवंगत महंत श्री घासीदास के संरक्षण में एक संग्रहालय की स्थापना उस स्थान पर की गई थी जहां आजकल सिलवर जुबली अस्पताल है। अष्टकोण आकृति में बने हुये इस छोटे किन्तु भव्य भवन में छत्तीसगढ़ क्षेत्र तथा आसपास के देशी राज्यों से प्राप्त ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, प्राकृतिक तथा जीवन के विभिन्न अंगों पर प्रकाश डालने वाली सामग्री एकत्र की गई थी।

संग्रहालय की स्थापना के नौ वर्ष बाद सन् १८८४ में इसकी व्यवस्था का उत्तरदायित्व रायपुर की डिस्ट्रिक्ट कौंसिल को सौंप दिया गया था जो नगरपालिका की आर्थिक सहायता से संस्था को किसी तरह चलाती रही। आगे चलकर नगर-पालिका ने संग्रहालय को आर्थिक सहायता देना बन्द कर दिया। इसलिये डिस्ट्रिक्ट कौंसिल (अब जनपद सभा) को अकेले इस भार को वहन करने में कठिनाई होने लगी। धीरे-धीरे संग्रहालय भवन पर समय का विनाशक प्रभाव भी दृष्टिगोचर होने लगा और सामयिक देखभाल के अभाव में वह निरन्तर क्षतिग्रस्त होता गया। यह स्पष्ट दिखने लगा कि यदि पर्याप्त धन लगा कर तुरन्त ही भवन का जीर्णोद्धार न किया गया तो वह किसी भी समय ढह जावेगा। यह भी अनुभव किया गया कि यदि संग्रहालय की प्रदर्शन सामग्री में अभिवृद्धि न की गई तब तो संस्था की उपादेयता ही लुप्त हो जायगी और भविष्य में उससे कोई विशेष लाभ न होगा।

सन् १९४५ में रायपुर के तत्कालीन जिलाध्यक्ष महोदय ने जनहितैषी कृपालु दाताओं के नाम संस्था की सहायता के

मिट्टी की बनी श्रीकृष्ण की प्रतिमा

हाथीदांत की बनी लक्ष्मी की प्रतिमा

लिये एक मार्मिक अपील प्रेषित की तथापि दुर्भाग्यवश कोई सहयोग प्राप्त न हो सका। सन् १६४८ में छत्तीसगढ़ विभाग के कमिश्नर महोदय ने पुनः इस ओर उद्योग प्रारम्भ किया। तभी यह अनुभव किया गया कि छत्तीसगढ़ विभाग और भूतपूर्व देशी राज्यों के मध्य में स्थित रायपुर नगर में एक आधुनिक ढंग से सुसज्जित संग्रहालय की नितान्त आवश्यकता है। वैज्ञानिक ढंग पर पूर्णतया सुसज्जित संग्रहालय के साथ एक पुस्तकालय की स्थापना करने की आवश्यकता का भी अनुभव किया गया जो विद्वानों और विद्यार्थियों, दोनों के लिये उपयोगी हो तथा जहां युगों का संचित ज्ञान मूर्तिमान हो उठे; क्योंकि ऐसी संस्था का न केवल शैक्षणिक महत्व होता है अपितु इससे नगर तथा निकटवर्ती क्षेत्र के सामाजिक और सांस्कृतिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान मिलता है।

शासन सूत्र जनता के हाथों में आने के बाद मध्यप्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री स्वर्गीय पं० रविशंकर जी शुक्ल का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ। उनके प्रयत्न से नये संग्रहालय की स्थापना हुई। राजनांदगांव के भूतपूर्व शासक महंत घासीदास की दानवीरता के फलस्वरूप ही पुराने संग्रहालय की स्थापना हुई थी, इसलिये राजनांदगांव की रानी साहिबा श्रीमती ज्योतिदेवी और उनके सुपुत्र स्वर्गीय राजा दिग्विजयदास ने भी आदर्श परम्परा का निर्वाह करते हुये नवीन संग्रहालय भवन के निर्माण के लिये १।। लाख रुपये का उदार दान दिया। इसके अतिरिक्त अपने स्वर्गीय पति महंत सर्वेश्वरदास की स्मृति को अक्षुण्ण बनाये रखने के अभिप्राय से संग्रहालय से संलग्न एक पुस्तकालय बनाने के लिये भी रानी ज्योतिदेवी ने ५० हजार रुपये का दान और दिया। नया संग्रहालय, स्व० महंत घासीदास जी की स्मृति में महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय के नाम से, और तत्संलग्न पुस्तकालय, महन्त सर्वेश्वरदास ग्रन्थालय के नाम से, प्रसिद्ध हैं। रायपुर का पुराना संग्रहालय जिसे सन् १८७५ में स्व० महंत घासीदास जी ने स्थापित किया था और जिसकी व्यवस्था जनपद सभा रायपुर की म्यूजियम फण्ड कमेटी करती आ रही थी, नये संग्रहालय में विलीन कर दिया गया है। स्थान की कमी से महंत सर्वेश्वरदास ग्रन्थालय वर्तमान में संग्रहालय की श्रोतृशाला में स्थित है।

संग्रहालय भवन

जिला न्यायालय और कमिश्नर-कार्यालय के बीचों-बीच लगभग २ लाख २८ हजार रुपये के व्यय से संग्रहालय की दो-मंजिला सुन्दर इमारत बनाई गई है जो वास्तुकला का सुन्दर नमूना है। भवन के चारों ओर नयनाभिराम पार्क है और भवन को घेरती हुई एक दीवाल है जिसमें पश्चिम तथा उत्तर

की ओर प्रवेशद्वार हैं। संग्रहालय भवन में भूमितल पर एक प्रवेश-प्रशाल (१०८० वर्ग फुट) है। उसके पूरब में दो दीर्घाएँ (क्रमशः १०५० और ७८० वर्ग फुट) और दक्षिण में एक श्रोतृशाला (१८३० वर्ग फुट) है। कार्यालय आदि के लिये चार कमरे हैं जिनमें ७३५ वर्ग फुट स्थान उपलब्ध है। प्रवेश-प्रशाल से ऊपर दो और दीर्घाएँ हैं जिनमें क्रमशः १०८० और ११५२ वर्ग फुट स्थान है। भवन में संग्रहकोष्ठ की कमी है किन्तु उसके इस वर्ष बन जाने की आशा है। भवननिर्माण के समय इस बात का ध्यान रखा गया है कि कार्यालय में जाने के लिये अलग प्रवेशद्वार हो और इस प्रकार कार्यालय में जाने के लिये लोगों को दीर्घाओं में से होकर नहीं जाना होता।

संग्रहालय की अपनी जल-व्यवस्था है। हाते के भीतर ही चौकीदार के लिये वासगृह बनाया गया है।

संग्रहीत सामग्री

क्षेत्रीय संग्रहालय होने के कारण संग्रहालय में क्षेत्रीय आधार पर ही सामग्री संग्रहीत की गई है किन्तु कुछ वस्तुएं मध्यप्रदेश के अन्य क्षेत्रों तथा देश के विभिन्न भागों से भी प्राप्त की गई हैं। संग्रहालय के समस्त संग्रह को मुख्यतः पांच उपविभागों में बांटा गया है। यथाः—

(१) **पुरातत्व उपविभाग**–के संग्रह में प्रागैतिहासिक औजार,
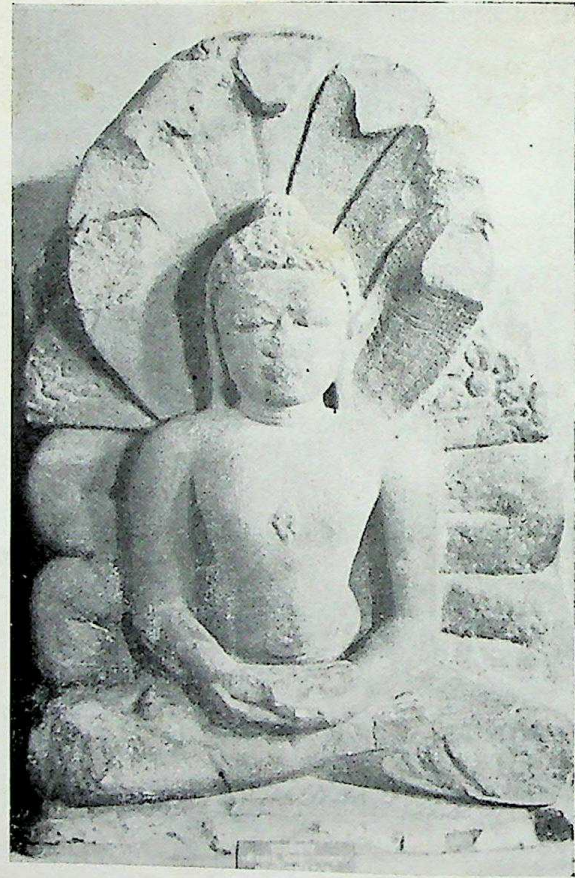
[पार्श्वनाथ, आठवीं शती, सिरपुर]

मध्यकालीन प्रतिमाएं, धातुप्रतिमाएं, उत्कीर्णलेख, सिक्के, मिट्टी के खिलौने और बरतन, हस्तलिखित पोथियां और शस्त्रास्त्र आदि सम्मिलित हैं। चम्बल कांठे से प्राप्त प्रागैतिहासिक औजार पाषाण के हैं और गुंगेरिया (बालाघाट) से प्राप्त औजार ताम्र के। दोनों प्रकार के औजार दो भिन्न युगों की लोकरुचि का चित्र उपस्थित करते हैं। धनोरा (जिला दुर्ग) की खुदाई में प्राप्त इतिहासपूर्व काल की वस्तुएं भी संग्रहालय में आ गई हैं।

पाषाण प्रतिमाएं मुख्यत: दो राजवंशों के काल की हैं, सोमवंश और कलचुरि वंश। सोमवंशी राजाओं को पाण्डववंशी भी कहा जाता था। इनके समय में निर्मित और रतनपुर (जिला बिलासपुर) से प्राप्त शिवपार्वती-विवाह वाली प्रतिमा सुन्दर कलाकृति है।

इसके अतिरिक्त सिरपुर (रायपुर) की खुदाई में प्राप्त हुई पाण्डवकालीन प्रतिमाएं भी संग्रहालय में हैं। कलचुरि राजवंश की मुख्य शाखा त्रिपुरी में राज्य करती थी, वहां से ही उनकी एक लहुरी शाखा छत्तीसगढ़ में आई जो रतनपुर के कलचुरियों के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध है। रतनपुर के कलचुरियों के राज्यकाल की प्रतिमाएं १२ वीं शताब्दी की हैं। उनमें से विष्णु की विशाल प्रतिमा, उमामहेश्वर, गौरी, कार्तिकेय, ऋषभनाथ और चन्द्रप्रभ की प्रतिमाएं महत्वपूर्ण हैं। त्रिपुरी के कलचुरियों के राज्यकाल में निर्मित प्रतिमाओं का एक बड़ा सा संग्रह कारीतलाई (जबलपुर) से अवाप्त किया गया है। उस संग्रह की प्रतिमाओं का निर्माणकाल १० वीं और ११ वीं शती है। उनमें विष्णु और उनके अवतारों की प्रतिमाएं, शिव, पार्वती, गणेश, भैरव, ब्रह्मा, वरुण, सूर्य, जैन तीर्थंकरों की पद्मासन और कायोत्सर्ग आसन में स्थित प्रतिमाएं, तथा अम्बिका आदि की प्रतिमाओं के अतिरिक्त, अप्सराओं और नायिकाओं की प्रतिमाएं भी सम्मिलित हैं।

गोंड़ कालीन प्रतिमाओं में तत्कालीन वेशभूषा का अच्छा निदर्शन है। राजनांदगांव से प्राप्त तीन बंदर, ,,बुरा मत कहो, बुरा मत सुनो, और बुरा मत देखो'' का संदेश देते हैं।

संग्रहालय का धातुप्रतिमाओं का संग्रह है तो छोटा, किन्तु बहुत महत्वपूर्ण है। उसमें सिरपुर से प्राप्त ८ वीं शती की सुप्रसिद्ध लेखयुक्त बौद्ध धातु-प्रतिमाओं के अतिरिक्त सलखन से प्राप्त ८ वीं शती की गौरी तथा अन्य प्रतिमाएं हैं।

उत्कीर्ण लेखों में किरारी से प्राप्त काष्ठस्तंभ-लेख अपने
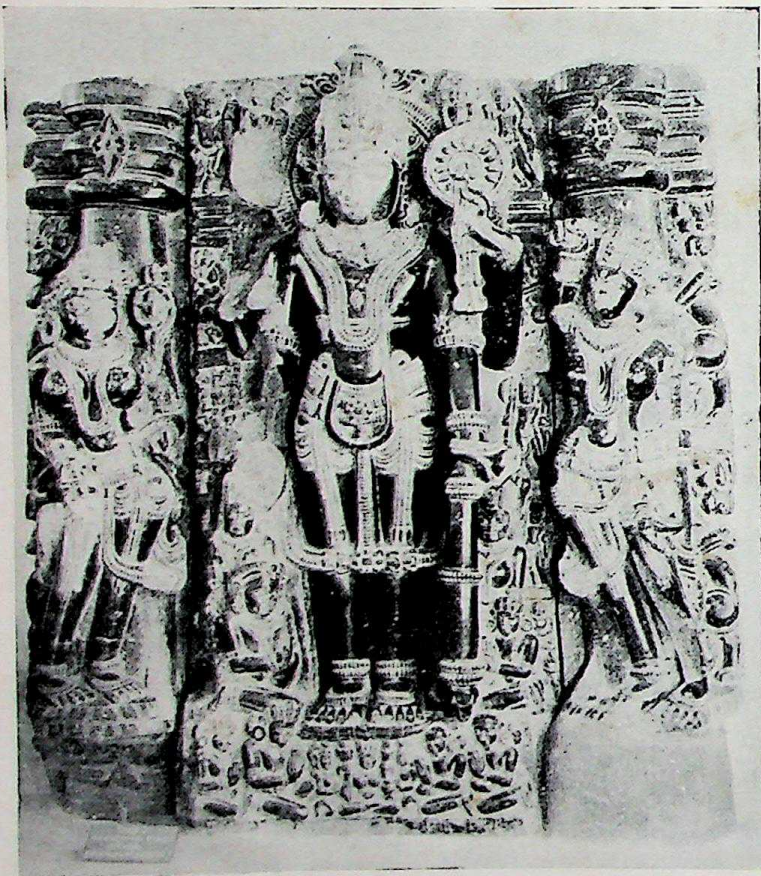
विष्णु; बारहवी शती; रतनपुर
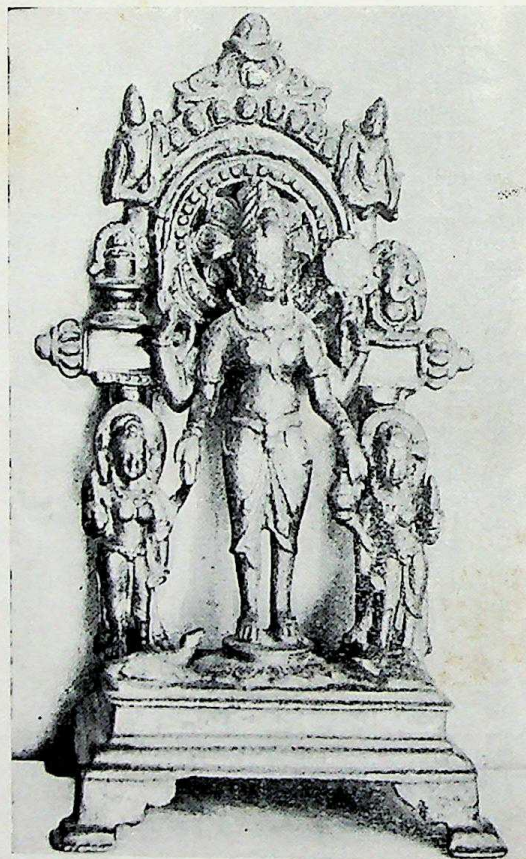
गौरी; आठवीं-नौवी शती; सलखन (बिलासपुर)

ढंग का एक ही है। उसका समय ईस्वी २री शती है। अन्य उत्कीर्ण लेख शरभपुरीय, पाण्डव और कलचुरि राजाओं के समय के हैं। उनमें से कुछ ताम्रपत्रों पर हैं और कुछ शिलापट्टों पर।

सिक्कों के सग्रह में आहत मुद्राओं से लेकर ब्रिटिश काल तक के सिक्के हैं। ब्रिटिश काल के तमगे महत्वपूर्ण हैं। संग्रहालय के मिट्टी के प्राचीन खिलौने तथा बरतन सिरपुर और पसेवा की खुदाई में प्राप्त हुये थे। हस्तलिखित पोथियां, शस्त्रास्त्र तथा अन्य फुटकर सामग्री भी इस उपविभाग में संग्रहीत की गई है।

(२) **कलाकौशल उपविभाग**ः—में काशी, प्रयाग, जयपुर, मुरादाबाद, बिलासपुर आदि स्थानों में बने सादे, रंगीन और खुदाई के काम वाले धातुपात्र हैं। बंबई, दिल्ली और लखनऊ के हाथीदांत के काम के नमूने, जयपुर और बरेली के लाख के बरतन, आगरा की पत्थर की खुदाई और जड़ाई के नमूने, बनारस का जरी का काम, लखनऊ का चिकन-काम, बिसानगर, गुजरात, कानपुर और आगरा का लकड़ी पर नक्काशी का काम तथा लखनऊ, बम्बई, फैजाबाद और अलीगढ़ के मिट्टी के नक्काशीदार बर्तन भी इस उपविभाग

वज्रपाणि; आठवीं-नौवीं शती; सिरपुर

जार्ज पंचम की विशाल प्रतिमा
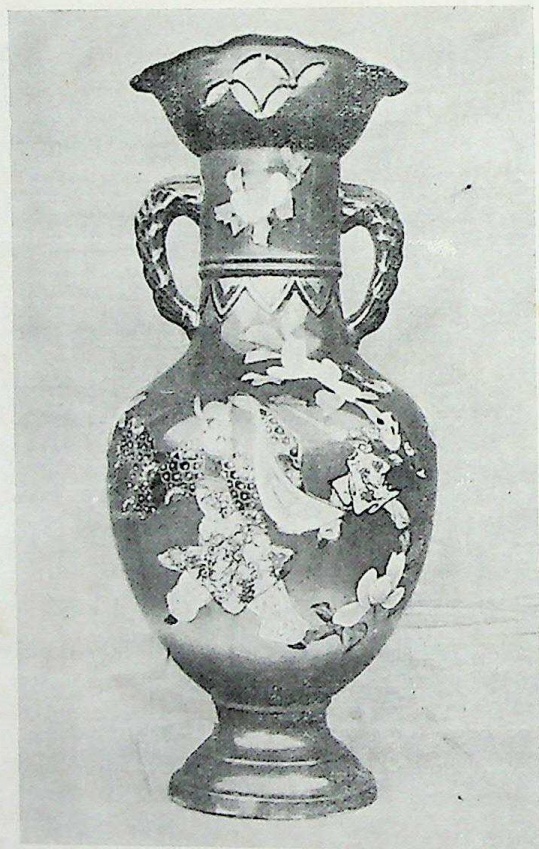
चीनी कलश
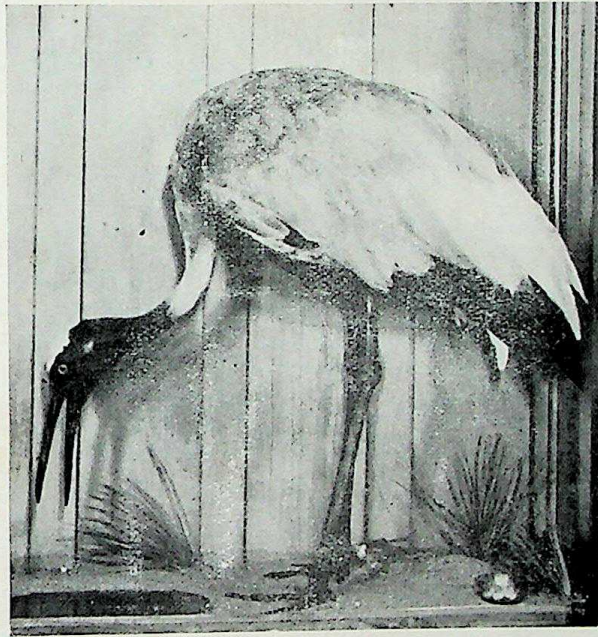
संग्रहालय में प्रदर्शित सारस

में संग्रहीत हैं। लखनऊ में बने मिट्टी के फल और तरकारियां, बीदरी के नमूने, बंगाल और मध्यप्रदेश की मिट्टी की मूर्तियां, कटक का तारकशी का काम, पुरी का सींगकाम और पत्थर की आकृतियां तथा रंगे हुये लकड़ी के बरतन, भेड़ाघाट की सोपस्टोन की वस्तुएं, मैसूर की हाथी-दांत और बांस की कलाकृतियां, चमड़े के खिलौने तथा हस्तकौशल की तरह तरह की अन्य वस्तुएं संग्रहालय के कलाकौशल उपविभाग में संग्रहीत हैं।

(३) **प्रकृति-इतिहास उपविभाग**—में स्तनप्राणी, पक्षी, सरीसृप और उभयचर श्रेणियों के विभिन्न परिवारों के जीव प्रदर्शित किये गये हैं।

(४) **मानवशास्त्रीय उपविभाग**—में महाकौशल और विदर्भ में निवास करने वाली जनजातियों यथा, गोंड़, माड़िया, कोरकु, उरांव और बंजारा लोगों के वस्त्र, आभरण, गहने, वाद्य तथा दैनिक उपयोग की विभिन्न वस्तुएं सजाई गई हैं।

(५) **चित्र उपविभाग**—में अजंठा, मुगल, राजपूत और कांगड़ा कलम के प्राचीन चित्रों की प्रतिकृतियों के साथ आधुनिक कलाकारों और विशेषकर क्षेत्रीय कलाकारों की चित्रकृतियां संग्रहीत हैं।

संग्रह में अभिवृद्धि

संग्रहालय की उपादेयता बढ़ती रहे इसलिये सीमित साधनों के बावजूद संग्रहालय की प्रदर्शन सामग्री में प्रतिवर्ष अभिवृद्धि

[संग्रहालय में प्रदर्शित अंधा बगुला]

की जाती है। नई वस्तुएं अवाप्त करते समय संग्रहालय की आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाता है और उन वस्तुओं के संग्रह को प्राथमिकता दी जाती है जिनकी समकक्ष वस्तुओं की संग्रह में कमी होती है। सन १९५३, १९५४ और १९५५ में संग्रहालय के कलाकौशल उपविभाग और प्रकृति इतिहास उपविभाग के संग्रह में पर्याप्त अभिवृद्धि की गई। सन १९५६ में मानवशास्त्रीय उपविभाग की ओर विशेष ध्यान दिया गया और सन १९५७ में पुरातत्व उपविभाग का संग्रह बढ़ाया गया। विगत तीन वर्षों में अवाप्त प्रदर्शन सामग्री के आंकड़े इस प्रकार हैं।

वर्ष	१९५६-५७	१९५७-५८	१९५८-५९
पाषाण प्रतिमाएं	११	१२२	१
धातुप्रतिमाएं	—	१	१
उत्कीर्ण लेख	१	१	१
सिक्के	७३	६१	१०००
हस्तलिखित पोथियां	४	३०	—
चित्र	३३	५७	२०
मृण्मूर्तियां और पात्र	१७	५८	—
कलाकौशल की वस्तुएं	२४	२५	४६
जनजातियों की वस्तुएं	९७	—	—
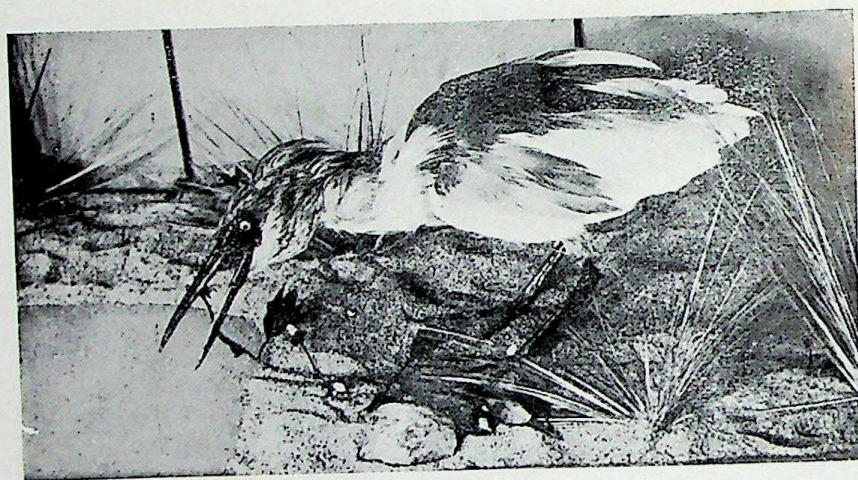
दर्शक

संग्रहालय अप्रैल से अक्टूबर तक प्रातः ७ से १० बजे तक और फिर ३ बजे से ६ बजे तक खुला रहता है। जाड़े के दिनों

में नवम्बर से मार्च तक संग्रहालय के समय में परिवर्तन हो जाता है और वह प्रातः ८ बजे से ११ बजे तक तथा फिर २ बजे से ५ बजे तक खुला रहता है ।

दीर्घा-सहायक दीर्घाओं में प्रदर्शित वस्तुओं के बारे में दर्शकों को बताते हैं । प्रवेशद्वार पर संग्रहालय के प्रकाशन, यथा पिक्चर पोस्ट-कार्ड, सूचीपत्र आदि, बिक्री के लिये रखे गये हैं। दर्शकों की सुविधा का संग्रहालय विशेष ध्यान रखता है और उनके बैठने के लिये प्रत्येक दीर्घा में बेंचों की व्यवस्था की गई है । उसी प्रकार पीने के पानी, क्लाक-रूम, बाथरूम आदि की व्यवस्था भी है ।

संग्रहालय की लोकप्रियता का ज्वलंत उदाहरण उसमें आने वाले दर्शकों की संख्या है जो निरन्तर बढ़ती जा रही है । विगत वर्षों में आनेवाले दर्शकों की संख्या के निम्नलिखित आंकड़ों से संग्रहालय की उपयोगिता का अंदाज होता है ।

वर्ष	औसत प्रतिदिन
१९५३-५४	२५०
१९५४-५५	३००
१९५५-५६	३५०
१९५६-५७	३५०
१९५७-५८	५५०
१९५८-५९	६२५

स्थानीय उत्सवों जैसे रथयात्रा, महादेवघाट मेला आदि के दिन दर्शकों की संख्या ५००० तक बढ़ जाती है ।

प्रदर्शन

आधुनिक संग्रहालय का उद्देश्य वस्तुओं के संग्रह कर लेने तक ही सीमित नहीं है । वह उन्हें उनकी तमाम विशेषताओं की जानकारी देते हुये समुचित ढंग से इस प्रकार प्रदर्शित करता है कि शिक्षित और अशिक्षित दोनों ही प्रकार के दर्शक प्रदर्शित सामग्री से लाभ उठा सकें । संग्रहालय की वस्तुएं जानकारों के ज्ञानवर्धन में सहायक तो होती ही हैं, वे स्कूल और कालेजों के विद्यार्थियों तथैव सर्वसाधारण लोगों की विभिन्न कार्यकलापों में रुचि पैदा करती हैं । उपरोक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिये संग्रहालय की दीर्घाओं में वस्तुएं यथोचित ढंग से बनाये गये विभिन्न प्रकार के शो केसों में, यथा भित्ति केस, आड़े केस, खड़े केस, उतारयुक्त केस, घूमने वाले केस आदि में प्रभावक ढंग से प्रदर्शित की गई हैं। चित्रों को घूमने वाले केस में और सिक्कों, पोथियों तथा ताम्र-पत्रों को उतार वाले शोकेस में प्रदर्शित किया गया है । पाषाण प्रतिमाएं तथा शिलालेख चिनाई किये गये आसनों पर सजाये गये हैं। प्रत्येक प्रदर्शित वस्तु के साथ विवरण पट्टियां लगायी गई हैं जो हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में हैं । इनमें वस्तु की प्राप्ति का स्थान तथा उसके निर्माणकाल का उल्लेख

पुरातत्त्व दीर्घा का एक दृश्य

को दर्शाने वाला चार्ट अधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है। उसी प्रकार प्राचीन काल के गहनों, सिक्कों पर मिले प्रतीकों, छत्तीसगढ़ के प्राचीन स्मारकों के रंगीन चित्र आदि भी कौतूहल और ज्ञान दोनों वर्धक हैं।

निरंतर यह अनुभव किया जा रहा है कि संग्रहालय में कृत्रिम प्रकाश की व्यवस्था अपर्याप्त है विशेषकर प्रकृति इतिहास दीर्घा में तो उसकी कमी से दर्शक प्रदर्शित वस्तुओं का सम्पूर्ण लाभ नहीं ले पाते। आशा की जाती है कि इस कमी की शीघ्र ही पूर्ति की जा सकेगी और वस्तु को स्वतंत्र व सामूहिक रूप से प्रकाशयुक्त करने की व्यवस्था निकट भविष्य में हो सकेगी।
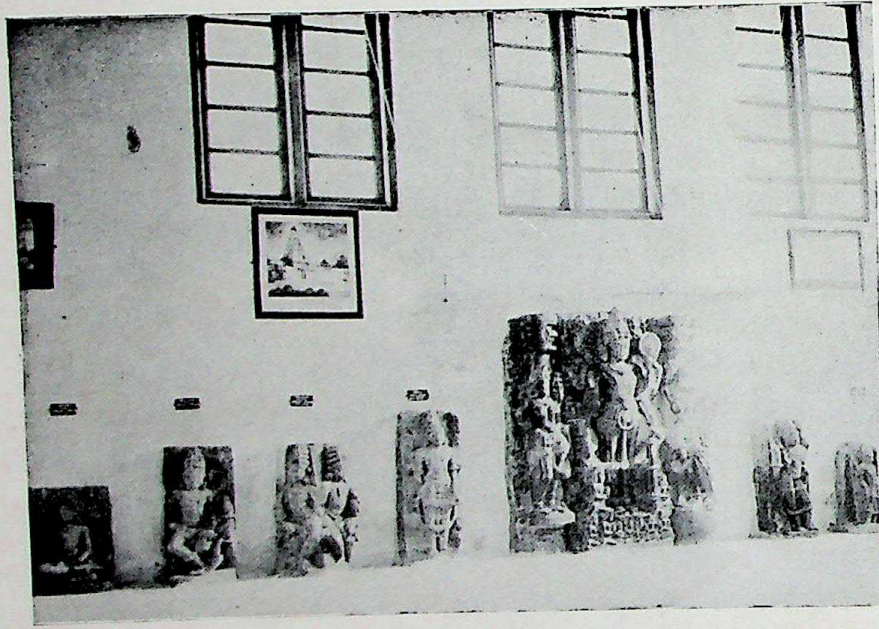
है। शिलालेखों के साथ उनके संक्षिप्त विवरण दिये गये हैं जिनमें लेख की भाषा, लिपि, राजा और विषय संबंधी सूचनाएं हैं। वस्तुओं के प्रदर्शन में यह ध्यान रखा गया है कि वे सघन न हों। साथ ही उनके संबंध में अन्य जानकारी देने वाले नक्शे, चार्ट आदि लगाये गये हैं। नागरी लिपि के विकास

प्रयोगशाला, अनुसंधान और प्रकाशन

संग्रहालय में वर्तमान में प्रयोगशाला नहीं है किन्तु उसकी पूर्ति निकट भविष्य में हो जाने की आशा है।

शिलालेख दीर्घा का एक दृश्य

तथा पुरातत्व उपविभाग में संग्रहीत वस्तुओं का विस्तृत सूचीपत्र प्रकाशित करने की योजना है। इसके अतिरिक्त संग्रहालय की वस्तुओं तथा महाकौशल की पुरातत्व सामग्री और जनजातियों सम्बन्धी चित्राधार तैयार किये गये हैं जो मांगकर कार्यालय में ही देखे जा सकते हैं।

सामयिक और अस्थायी प्रदर्शनियां

विशिष्ट अवसरों पर संग्रहालय की ओर से विशेष-विशेष प्रदर्शनियों का आयोजन किया जाता है। उसी प्रकार अस्थायी प्रदर्शनियां तथा सामयिक प्रदर्शनियां भी आयोजित की जाती हैं। समकक्ष संस्थाओं, विद्यालय और महाविद्यालयों को भी संग्रहालय की वस्तुएँ प्रदर्शन या अध्ययन हेतु दी जाती हैं।

संग्रहालय के नये भवन के उद्घाटन के अवसर पर एक विशेष कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था

संग्रहालय के कर्मचारी विभिन्न विषयों और वस्तुओं पर अनुसंधान करते रहते हैं और अपने लेख अनुसंधान पत्रिकाओं में प्रकाशित करते हैं। बाहर के विद्वानों को भी उनके अनुसंधान कार्य में सहयोग दिया जाता है। संग्रहालय की ओर से अब तक पिक्चर पोस्टकार्ड, संग्रहालय परिचय तथा संग्रहालय के संग्रह के सिक्कों और उत्कीर्ण लेखों के विवरणात्मक सूचीपत्र प्रकाशित किये जा चुके हैं। प्रस्तुत वर्ष में विभिन्न दीर्घाओं की मार्गदर्शिकाएं

नागरी लिपि का विकास

संग्रहालय में प्रदर्शित नागरी लिपि के विकास का नकशा

जो एक पखवाड़े तक चली। उसी अवसर पर राज्य के पुराने और वर्तमान समाचार पत्रों की भी एक प्रदर्शनी आयोजित हुई थी। सन् १९५५ में सिरपुर की खुदाई में प्राप्त अवशेषों की, सन् १९५६ में कलाकार कानेटकर के चित्रों की और सन् १९५८ में श्री चिटनीस के चित्रों की प्रदर्शनी हुई। इसी बीच स्थानीय और नगर के बाहर की अनेक कला प्रदर्शनियों में संग्रहालय ने भाग लिया। मई १९५८ की रायपुर प्रदर्शनी में संग्रहालय का स्टाल लगभग ६०००० लोगों ने देखा। उसी प्रकार आवड़ी और इन्दौर के कांग्रेस अधिवेशन, रोटरी इन्टरनेशनल शताब्दी जबलपुर, ललित कला अकादमी द्वारा आयोजित बौद्ध कला प्रदर्शनी, जर्मनी तथा अन्य यूरोपीय देशों में आयोजित 'भारतीय कला के ५००० वर्ष' नामक प्रदर्शनी में भी संग्रहालय से कला-कृतियां भेजी गईं।

अन्य शैक्षणिक कार्यकलाप

संग्रहालय द्वारा विद्यालयों और महाविद्यालयों के विद्यार्थियों तथा रुचिशील दर्शकों को मार्गप्रदर्शन सेवाएँ तो दी ही जाती हैं, इसके अतिरिक्त विशिष्ट सांस्कृतिक समारम्भों का भी आयोजन किया जाता है। संग्रहालय के सहायक संग्रहाध्यक्ष अखिल भारतीय विद्या-संस्थाओं

के वार्षिक सम्मेलनों में सम्मिलित होते हैं और वहां अनुसन्धानात्मक निबन्ध बांचते हैं। विद्वानों और अनुसन्धानकर्ताओं को संग्रहालय की सामग्री के छायाचित्र तथा अन्य वांछित जानकारी दी जाती है। स्थानीय प्रकाशन कार्यालय के सहयोग से कभी-कभी सांस्कृतिक और संग्रहालय से सम्बन्धित विषयों पर सिनेमा फिल्म दिखाने की भी व्यवस्था की जाती है।
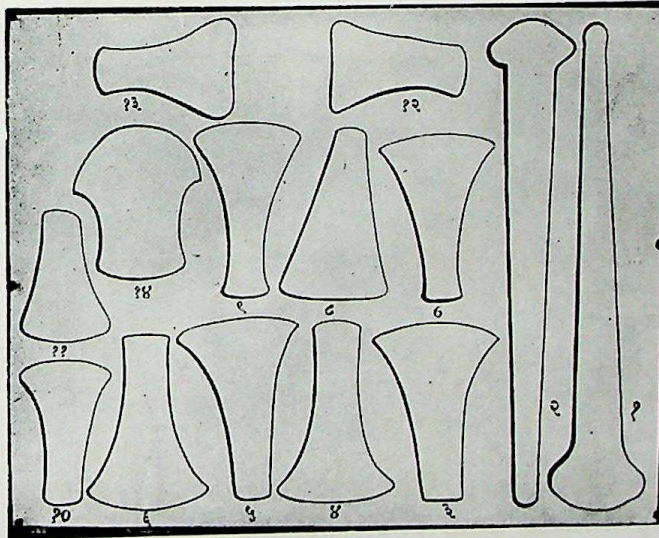
संग्रहालय में प्रदर्शित ताम्रयुगीन औजार

संग्रहालय में श्रोतृ शाला है किन्तु जब तक महंत सर्वेश्वरदास ग्रन्थालय के लिये अलग से स्थान की व्यवस्था नहीं हो जाती तब तक भाषण, विचारगोष्ठी आदि कार्यक्रमों का आयोजन
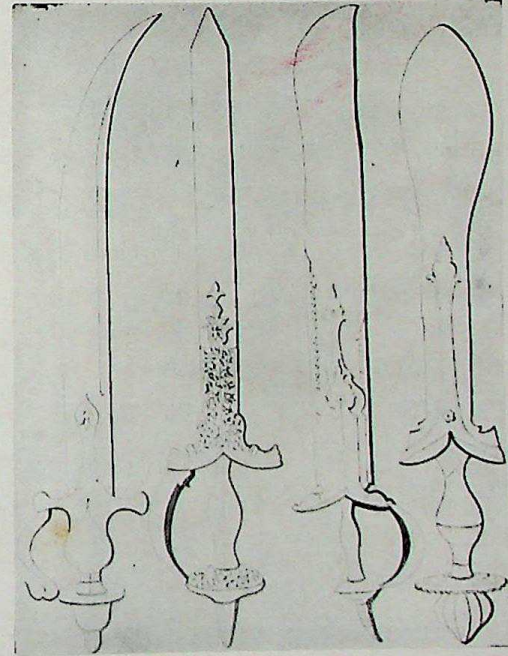
संग्रहालय में प्रदर्शित तलवारें

करने में कठिनाई होती है। आशा है कि इस वर्ष संग्रहालय को एपिडाइस्कोप, प्रोजेक्टर, टेप रिकार्डर जैसे उपकरण उपलब्ध हो सकेंगे और तब संग्रहालय के शैक्षणिक कार्यकलाप में और भी वृद्धि हो सकेगी।

निर्देश ग्रन्थालय

अनुसंधान कार्य के लिये एक अच्छे निर्देश ग्रन्थालय की आवश्यकता होती है जिसमें ग्रन्थों के अतिरिक्त सभी प्रकार के सामयिक भी उपलब्ध हों। संग्रहालय के निर्देश ग्रन्थालय का क्रमशः विकास किया जा रहा है। वर्तमान में ग्रन्थालय में लगभग १८०० पुस्तकें हैं।

कर्मचारी वृन्द

संग्रहालय के कार्य संचालन के लिये सहायक संग्रहाध्यक्ष और उसमें उनकी सहायता करने के लिये एक दीर्घा सहायक, एक लिपिक और चपरासियों के पद शासन द्वारा सम्मोदित हैं। अन्य तांत्रिक पद जैसे मार्कसमैन, फोटोग्राफर, केमिस्ट, ड्राफ्टमैन, टेक्सीडरमिस्ट आदि की व्यवथा अभी तक नहीं हो पाई है।

वित्त

संग्रहालय के कार्य संचालन के लिये प्रतिवर्ष मध्यप्रदेश शासन से अनुदान प्राप्त होता है।

महंत सर्वेश्वरदास ग्रन्थालय

जैसा कि पहले बताया जा चुका है, नांदगांव की रानी श्रीमती ज्योतिदेवी ने अपने स्वर्गीय पति महंत सर्वेश्वरदास की स्मृति को अक्षुण्ण बनाये रखने के अभिप्राय से संग्रहालय से संलग्न एक पुस्तकालय बनाने के लिये ५० हजार रुपये का दान और दिया था। इस दान से महंत सर्वेश्वरदास ग्रन्थालय की स्थापना हुई है। ग्रन्थालय का अलग भवन नहीं बन पाया है और वह वर्तमान में संग्रहालय की श्रोतृशाला में स्थापित है।

महंत सर्वेश्वरदास ग्रन्थालय की स्थापना से रायपुर शहर की एक बड़ी आवश्यकता की पूर्ति हुई है। यह ग्रन्थालय बड़ा ही लोकप्रिय हुआ है। इसमें हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत तथा अन्य भारतीय भाषाओं के लगभग ६००० ग्रन्थ संग्रहीत हैं। प्रतिवर्ष नई पुस्तकें खरीद कर ग्रन्थसंग्रह की अभिवृद्धि की जाती है। इसके अतिरिक्त हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, और बंगला भाषाओं के चालीस के लगभग पत्र-पत्रिकाएं और सामयिक आदि बुलाये जाते हैं। समाचार-पत्रों को बांचकर औसत १२५ व्यक्ति प्रतिदिन लाभ उठाते हैं। अनुसंधान कार्य करने वालों तथा ग्रन्थालय में ही ग्रन्थ बांचने वालों के लिये विशेष व्यवस्था है जिससे प्रतिवर्ष ३००० से ऊपर व्यक्ति लाभ लेते हैं।

ग्रन्थालय का प्रवंध संग्रहालय के सहायक संग्रहाध्यक्ष, ग्रन्थपाल की सहायता से करते हैं। पुस्तकों की प्रति वर्ष खरीदी के लिये शासन द्वारा एक समिति नियुक्त की गई है।

नामांकित विसेव्यों को घर ले जाने के लिये ग्रन्थ निर्गमित किये जाते हैं। कोई भी व्यक्ति जो १७ वर्ष या उससे अधिक अवस्था का हो और रायपुर शहर या उसके आसपास के गांव का निवासी हो, २० रुपये जमा कर तथा अपना प्रतिभू खड़ाकर ग्रन्थालय का विसेव्य बन सकता है और एक साथ दो पुस्तकें दो सप्ताह के लिये ले जा सकता है। स्थानीय महाविद्यालयों के विद्यार्थी १० रुपये जमा करने पर तथा उनके प्राचार्य के प्रतिभू होने पर एक समय केवल एक पुस्तक दो सप्ताह के लिए ले जा सकते हैं।

ग्रन्थालय के विसेव्यों की संख्या में क्रमशः वृद्धि होती जा रही है। पुराने सदस्यों के अतिरिक्त प्रतिवर्ष १५०-१७५ नये विसेव्य नामांकित होते हैं। वर्तमान में विसेव्यों की कुल संख्या ४०० के लगभग है।

ग्रन्थालय खुलने का समय

प्रातः ८ से १२ बजे तक
सायं ५ से ८ बजे तक
(बंद रहने के दिनः–संग्रहालय के समान)

उपसंहार

छत्तीसगढ़ के जिलों में ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व की सामग्री की प्रचुरता है। इसमें से बहुत सी अब तक कुछेक व्यक्तियों की निज की सम्पत्ति है। अनेक स्थानों पर शिलालेख, प्रतिमाएं, आदि अरक्षित पड़े हुये हैं किन्तु वहां के ग्रामनिवासी उन्हें वहां से संग्रहालय उठाने मे आपत्ति करते हैं। इसलिये संग्रहालय को सुसज्जित बनाने के लिये उपयोगी सामग्री प्राप्ति के हेतु एक व्यवस्थित आन्दोलन की आवश्यकता है।

विश्वास किया जाता है कि जनता के सहयोग, राज्य सरकार के नियन्त्रण और केन्द्रीय सरकार के गौरवपूर्ण संरक्षण में यह संग्रहालय और इससे संलग्न ग्रन्थालय शिक्षा और ज्ञान-वर्धन की दिशा में अमूल्य सेवाएँ अर्पित कर सकेंगे और मानवीय ज्ञान एवं गौरव की समुन्नति के उद्देश्य से प्रेरित होकर कार्य करने वाली देश की प्रमुख संस्थाओं में गिने जा सकेंगे।

संग्रहालय में प्रदर्शित पीतल के बरतन